International Journal of Home Science 2020; 6(2): 435-436

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2020; 6(2): 435-436
© 2020 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 14-05-2020
Accepted: 26-06-2020

उपमा सिंह
शोध छात्रा गृह विज्ञान, रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल, भारत

नीलमा कुँवर
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष,ईसीएम, गृह विज्ञान महाविद्यालय, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, भारत

Corresponding Author:
उपमा सिंह
शोध छात्रा गृह विज्ञान, रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल, भारत

किशोरावस्था में शालेय उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव

उपमा सिंह और नीलमा कुँवर

सारांश
किशोरावस्था मानव जीवन की सबसे सुंदर एवं स्वार्णिम अवस्था हैं। इस अवस्था में जीवन तरंग अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँच जाते हैं। किशोर–किशोरियाँ रंग–बिरंगे सपने देखते हैं। अपने भविष्य निर्माण हेतु ताना–बाना बुनते हैं। किशोरावस्था के अंत तक किशोर–किशोरियों का शारीरिक एवं मानसिक विकास पूर्ण हो जाता हैं। किशोरावस्था ऊर्जा से भरपूर होती हैं। आवश्यकता इस बात की होती है कि उसकी ऊर्जा को सही दिशा में लगाया जाए अन्यथा वे निर्माण के स्थान पर विनाश करने लग जाएँगे।

मुख्य शब्द – शालेय, उपलब्धि, अभिप्रेरणा

प्रस्तावना
बालक की उपलब्धि उसके बौद्धिक स्तर को दर्शाती है। बालक को स्वयं को साबित करने के लिए उपलब्धि मिलना आवश्यक है। उपलब्धि से व्यक्ति को संतुष्टि तो मिलती है साथ ही समाज में भी उसको संतुष्टि मिलती है। किशोरों के विकास में उपलब्धि की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रतियोगिता की संस्कृति वर्तमान बढ़ते हुए वैश्वीकरण की सच्चाई है आज वही सफल है जिसका लक्ष्य है, जिसका लक्ष्य निर्धारित हो तथा जो सफलता प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। सफलता एवं प्रभावशीलता वही प्रतिपादित कर सकता है जिसकी इच्छा शक्ति प्रबल हो। शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य किसी विषय या पाठ में छात्र द्वारा अर्जित ज्ञान या कुशलता से है। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली का आंकलन विद्यार्थी द्वारा प्राप्त शैक्षिक उपलब्धि द्वारा किया जा सकता है।

उद्देश्य
- किशोरों की शालेय उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करना।
- शासकीय एवं अशासकीय शालाओं में किशोरों के शालेय उपलब्धि अभिप्रेरणा में अन्तर ज्ञात करना।

अध्ययन पद्धति
इस अध्ययन के लिए फैजाबाद जिले का चयन किया गया है तथा दो शासकीय और पाँच अशासकीय स्कूल का चयन किया गया है। 200 शासकीय स्कूल के छात्र/छात्रायें तथा 200 अशासकीय स्कूल की छात्र/छात्राओं का चयन किया है। इसप्रकार कुल 400 छात्र/छात्राओं का चयन अध्ययन हेतु किया गया है। शैक्षिक उपलब्धि मापनी तथा समायोजन मापनी जैसे स्केल लगाये गए हैं तथा साख्यिकीय उपकरण माध्य, मानक विचलनश एनोवा तथा बाई वैरियट परीक्षा का इस्तेमाल किया गया है।

परिणाम

सारिणी–1 षासकीय विद्यालय के किषोर छात्र के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा पर समायोजन (समवय समूह समायोजन) के प्रभाव का अध्ययन

समायोजन की श्रेणी	संख्या	माध्य	मानक विचलन
अति निम्न	3	361.33	55.949
निम्न	12	342.17	66.475
मध्यम	24	379.88	40.385
उच्च	42	364.36	44.144
अति उच्च	19	366.26	52.459

प्रसरण विश्लेषण तालिका

चर	प्रसरण विश्लेषण	वर्गो का भाग	स्वातंत्रय कोटी	माध्य वर्ग योग	''एफ'' का मान	सार्थकता स्तर
शैक्षिक उपलब्धि	न्यादर्शो के 'अन्तर्गत' प्रसरण	11607.10	4	2901.78	1.243	झ0ण05
	न्यादर्शो के 'मध्य' प्रसरण	221814.29	95	2334.89		

स्वत्रंत कोटि का मान –4,95 0.01 पर श्फश का मानत्र 3.48
0.05 पर श्फश का मानत्र 2.45

शैक्षणिक उपलब्धि बच्चों की क्षमताओं को समायोजित करने पर आधारित है। व्यक्ति का जन्म समायोजित नहीं होता है। बल्कि उसकी क्षमतायें उसे किसी भी वातावरण में समायोजित करने की प्रेरणा देती है। बच्चे के व्यक्तितव पर विनाशकारी आजीवन प्रभाव डालता है। यह अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों का अध्ययन और पता लगाना बहुत महत्वपूर्ण है जो बच्चे के समायोजन, प्रेरणा को प्रभावित करता है और धीरे–धीरे यह शैक्षणिक उपलब्धि की ओर जाता है।

सारिणी–2 शासकीय विद्यालय के किशोर छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा पर समायोजन (समवय समूह समायोजन) के प्रभाव का अध्ययन

समायोजन की श्रेणी	संख्या	माध्य	मानक विचलन
अति निम्न	2	307.00	80.610
निम्न	5	354.40	51.423
मध्यम	12	328.42	50.106
उच्च	32	356.22	66.550
अति उच्च	49	369.27	54.163

प्रसरण विश्लेषण तालिका

चर	प्रसरण विश्लेषण	वर्गो का भाग	स्वातंत्रय कोटी	माध्य वर्ग योग	''एफ'' का मान	सार्थकता स्तर
शैक्षिक उपलब्धि	न्यादर्शो के 'अन्तर्गत' प्रसरण	22084.86	4	5521.22	1-625	>0.05
	न्यादर्शो के 'मध्य' प्रसरण	322805.14	95	3397.95		

स्वत्रंत कोटि का मान –4, 95 0.01 पर 'Q' का मान= 3.48
0.05 पर 'Q' का मान= 2.45

छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि उसके मदहंहमउमदज के स्तर से नापी जाती है। यदि छात्र का मदहंहमउमदज उच्च स्तर का है तो उसके शैक्षिक उपलब्धता का स्कोर उच्च स्तर का होगा।

सारिणी–3 शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की किशोर छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा पर समायोजन (समवय समूह समायोजन) के प्रभाव का अध्ययन

समायोजन की श्रेणी	संख्या	माध्य	मानक विचलन
अति निम्न	11	352.64	62.830
निम्न	32	335.03	52.440
मध्यम	73	361.58	44.359
उच्च	160	357.18	50.770
अति उच्च	124	367.84	49.844

प्रसरण विश्लेषण तालिका

चर	प्रसरण विश्लेषण	वर्गो का भाग	स्वातंत्रय कोटी	माध्य वर्ग योग	''एफ'' का मान	सार्थकता स्तर
शैक्षिक उपलब्धि	न्यादर्शो के 'अन्तर्गत' प्रसरण	29469.29	4	7367.32	2.964	<0.05*
	न्यादर्शो के 'मध्य' प्रसरण	981821.90	194	2485.62		

स्वत्रंत कोटि का मान –4,194 0.01 पर 'Q' का मान= 3.32
0.05 पर 'Q' का मान= 2.37

शैक्षिक प्रदर्शन एक प्रमुख तंत्र है जिसके अध्ययन से किशोर अपनी प्रतिभा, क्षमता और दक्षता को सीखता है। वो तरक्की की आकांक्षाओं को विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शैक्षिक प्रदर्शन स्कूल में प्रदर्शन के स्तर, उपलब्धि या स्कूल में सफला को दर्शाता है। एक तरह से शैक्षणिक प्रदर्शन स्कूली शिक्षा का तत्काल परिणाम है।

निष्कर्ष

शैक्षणिक उपलब्धि महत्वपूर्ण है क्योंकि वह सकारात्मक परिणामों से जुड़ी हुई है जिनका हम मूल्य रखते हैं। वयस्क जो शैक्षणिक रूप से सफल हैं और उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करते हैं वे नियोजित है, उनके पास उपयुक्त रोजगार है, कम शिक्षा वाले लोगों की तुलना में रोजगार के अधिक अवसर हैं। वे अपराधिक गतिविधियों में भी कम शामिल हैं और नागरिक के रूप में अधिक सक्रिय, स्वस्थ और खुश हैं। शैक्षणिक सफलता महत्वपूर्ण है क्योंकि कामकाजी लोगों को भविष्य में तकनीकी रूप से मांग वाले व्यवसायों से निपटने के लिए उच्च स्तर की शिक्षा की आवश्यकता होती है।

सुझाव

1. परिवार का वातावरण स्वस्थ रखें तथा परिवार में किसी भी तरह के झगड़े व कलह न होने दे। परिवार में बालकों का कभी उपहास ना उड़ाये समय–समय पर प्रेरणा देते रहना चाहिए।
2. निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों के साथ पक्षपात पूर्ण व्यवहार न करें।

संदर्भ

1. घौंटा, इशिता (2013) "आत्मविश्वास और कुछ जनसांख्यिकीय चर से संबंधित माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक प्रेरणा और समायोजन" https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/203598/1/thesis.pdf
2. चौधरी, डॉ. ऋचा; पहला संस्करणः (2010), विकासात्मक मनोविज्ञान ;क्मअमसवचउमदजंस च्लबीवसवहलद्ध, प्रकाशकः राधा पब्लिकेशनस, नई दिल्ली, किशोरावस्था व विकास, मानसिक समायोजन की समस्यायें। पृ.सं. 256–261.
3. जोशी, शोभना एवं आचार्य, नेहा (2014) "किशोर के घर का वातावरण और उपलब्धि की प्रेरणा", सोशल साइंस इंटरनेशनल, जन-जून २०१३, वॉल्यूम २ ९ अंक १, पी १०५-१२० १६ पी